रॉबर्ट वानॉय, निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 7ए

जोशुआ 1-5, जॉर्डन क्रॉसिंग, गिलगाल खतना, राहब झूठ बोल रहा है

समीक्षा

तृतीय. जोशुआ की किताब

ए. परिचयात्मक टिप्पणियाँ

4. कनान में इज़राइल की स्थापना के लिए समकालीन दृष्टिकोण

पिछले सप्ताह, हमने रोमन अंक III, "द बुक ऑफ़ जोशुआ" के साथ समापन किया था; अनुभाग ए. "परिचयात्मक टिप्पणियाँ"; और हमने ए-4 के लिए हैंडआउट देखा, "इज़राइल और कनान की स्थापना के लिए समकालीन दृष्टिकोण।" हमने उस हैंडआउट को बहुत जल्दी पढ़ लिया। हमने पारंपरिक विजय मॉडल का सर्वेक्षण किया, और फिर जिसे अक्सर संशोधित विजय मॉडल कहा जाता है, जहां कई शहरों के बजाय केवल तीन शहर वास्तव में नष्ट हो गए थे। हमने मुख्यधारा के बाइबिल अध्ययन, "प्रवासन" मॉडल और "किसान विद्रोह" मॉडल के अधिक समकालीन दृष्टिकोणों पर चर्चा की। तो पिछले सप्ताह हम यहीं रुके थे।

बी. कनान में प्रवेश: यहोशू 1:1-5:12

1. यहोशू का आयोग - यहोशू 1:1-9

यह हमें III पर लाता है। पुस्तक का बी., और यहीं से हम आज रात शुरू करेंगे, जोशुआ की पुस्तक से। "कनान में प्रवेश: जोशुआ 1:1-5:12" - आप देखेंगे कि बी के अंतर्गत पांच उप-बिंदु हैं। - मैं एक और दो पर बस कुछ बहुत ही संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूं, और फिर अधिक खर्च करना चाहता हूं तीन पर समय. बी के अंतर्गत एक है "जोशुआ का कमीशन; यहोशू 1:1-9।" आपको व्यवस्थाविवरण की पुस्तक याद है, मोआब के मैदानों में वाचा का नवीनीकरण। इसकी प्रमुख विशेषताओं में से एक मूसा से जोशुआ तक नेतृत्व का परिवर्तन था। व्यवस्थाविवरण 34 के अंत में, मूसा की मृत्यु हो गई और अब उत्तराधिकारी नेता बन गया, और मूसा का उत्तराधिकारी यहोशू है। आपने श्लोक 2 में पढ़ा, "मेरा सेवक मूसा मर गया। अब तुम [यहोशू], और ये सभी लोग,

जॉर्डन को पार करके उस देश में जाने के लिए तैयार हो जाओ जो मैं उन्हें - इस्राएलियों को दूंगा।" आप उस आयोग में देखेंगे (जो पद 9 तक चलता है), में पद 7, वह यहोशू से कहता है, "मजबूत और बहुत साहसी बनो। जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुम्हें दी है उन सभों के मानने में चौकसी करना; उस से न दाहिनी ओर मुड़ना, न बाईं ओर, कि जहां जहां तू जाए वहां सफल हो। यही व्यवस्थाविवरण धर्मशास्त्र है: यदि आप आज्ञाकारी हैं, तो आप धन्य होंगे और आप सफल होंगे। यदि आप अवज्ञाकारी हैं, तो वाचा का अभिशाप और न्याय आएगा। पद 8: "व्यवस्था की पुस्तक तेरे मुंह से उतरने न पाए; दिन-रात उस पर ध्यान करो ताकि तुम उसमें लिखी हर चीज़ को करने में चौकन्ना रहो। फिर तुम्हारी गिनती संपन्न और सफल लोगों में होगी।" तो यहोशू के लिए यह चुनौती है क्योंकि वह लोगों को जॉर्डन पार करने, कनान देश में प्रवेश करने और अंततः उस भूमि पर विजय प्राप्त करने के लिए नेतृत्व देता है।

2. लोग यहोशू 1:10-18 के तहत संगठित हैं

संख्या 2. बी के अंतर्गत है "लोगों को अध्याय 1:10-18 के तहत संगठित किया गया है।" आप वहां देखेंगे, श्लोक 11 में, यहोशू निर्देश देता है। वह अधिकारियों को आदेश देता है, "शिविर के चारों ओर जाओ और लोगों से कहो, 'अपनी आपूर्ति तैयार करो। अब से तीन दिन के बाद तुम यरदन पार करके उस देश पर अधिकार करोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें देता है।" इसलिए लोगों को जॉर्डन पार करने के लिए लामबंद किया गया, लेकिन वास्तव में ऐसा करने से पहले, आपके पास अगला अध्याय है।

3. यहोशू 2 जासूसों को नदी के पार भेजने के बारे में बताता है

अध्याय 2 इसराइल के नदी पार करने से पहले जासूसों को नदी पार भेजने के बारे में बताता है, यह देखने के लिए कि वहां क्या स्थिति है। इसमें वेश्या राहाब की कहानी शामिल है, जिसने उन जासूसों को शरण दी और जब जेरिको के राजा ने उन्हें पकड़ने की कोशिश करने के लिए अपने लोगों को भेजा तो उन्होंने उनकी रक्षा की। अध्याय 2 में राहाब की कहानी ऐसी है जिसने बहुत अधिक रुचि पैदा की है, और नैतिकता के दृष्टिकोण से, इसने काफी चर्चा आकर्षित की है कि राहाब के

आचरण का मूल्यांकन कैसे किया जाए। क्या उसने जेरिको के राजा के एजेंटों को गुमराह करने में कोई सराहनीय कार्य किया, ताकि वे ऐसा कर सकें *नहीं* उन जासूसों को पकड़ने में सक्षम? क्या यह सराहनीय है या ऐसा कुछ है जिसके लिए उसकी आलोचना या निंदा की जानी चाहिए? क्या उसने झूठ नहीं बोला?

एक। राहाब का विश्वास

हम कुछ ही मिनटों में उस पर वापस आने वाले हैं, लेकिन मुझे लगता है कि आप जोशुआ अध्याय 2 को कैसे भी पढ़ें, आपको इसे नए नियम के दो अंशों के आलोक में पढ़ना चाहिए। एक है इब्रानियों 11:31 और दूसरा है याकूब 2:25। इब्रानियों 11 वह अध्याय है जो पुराने नियम काल के विश्वास के नायकों की एक लंबी सूची का वर्णन करता है। आप आयत 31 में पढ़ते हैं, "विश्वास ही से वेश्या राहाब ने जासूसों का स्वागत किया, इसलिए वह अवज्ञाकारियों के साथ नहीं मारी गई।" जेम्स 2:25 इब्राहीम के विश्वास के बारे में बात करने के बाद, राहाब के बारे में थोड़ा और विवरण देता है। इसमें लिखा है, "इसी तरह, क्या राहाब को भी वेश्या नहीं माना गया *न्याय परायण* उसने क्या किया जब उसने गुप्तचरों को रहने की जगह दी और उन्हें दूसरी दिशा में भेज दिया?" आप देखेंगे कि इब्रानियों का पाठ और यहोशू 2 दोनों राहाब के विश्वास के बारे में बात करते हैं। मुझे लगता है कि राहाब का विश्वास ही उसने जो किया उसके स्पष्टीकरण की कुंजी है। यदि आप यहोशू 2:3 पर वापस जाते हैं, तो आप पढ़ते हैं कि "जेरिको के राजा ने राहाब को एक संदेश भेजा: 'उन पुरुषों को बाहर लाओ जो तुम्हारे पास आए और तुम्हारे घर में घुस गए, क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने आए हैं।' परन्तु स्त्री ने उन दोनों पुरुषों को ले जाकर छिपा दिया। उसने कहा, 'हां, वे लोग मेरे पास आए थे, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वे कहां से आए थे। सांझ के समय, जब नगर का फाटक बन्द करने का समय हुआ, तो वे लोग चले गए। मुझे नहीं पता कि वे किस रास्ते गये. जल्दी से उनके पीछे जाओ. आप उन्हें पकड़ सकते हैं।'"

लेकिन फिर पद 6 मूल रूप से हमें बताता है कि स्थिति की वास्तविकता क्या थी: "परन्तु वह उन्हें छत पर ले गई और छत पर बिछाए गए सन के डंठल के नीचे छिपा दिया।" लेकिन फिर आप

श्लोक 8 में पढ़ते हैं, और आप राहाब के विश्वास के बारे में कुछ देख सकते हैं: "जासूसों के रात के लिए सोने से पहले, वह छत पर गई और उनसे कहा, 'मुझे पता है कि यहोवा ने यह देश तुम्हें दिया है और तेरे कारण हम पर बड़ा भय समा गया है, यहां तक कि इस देश के सब रहनेवाले तेरे कारण भय से पिघल रहे हैं। हमने सुना है कि जब तुम मिस्र से निकले तो यहोवा ने तुम्हारे लिये लाल समुद्र का जल कैसे सुखा दिया, और तुम ने यरदन के पूर्व के एमोरी राजाओं सीहोन और ओग से क्या किया, जिन्हें तुम ने सत्यानाश कर डाला। जब हमने यह सुना तो हमारा हृदय पिघल गया और आपके कारण सबकी हिम्मत जवाब दे गयी। [क्यों?] क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर परमेश्वर है।'" राहब का विश्वास है। उसका मानना था कि यहोवा स्वर्ग और पृथ्वी पर परमेश्वर है। उन जासूसों को सुरक्षा देने की उनकी कार्रवाई उसी विश्वास से पैदा हुई कार्रवाई थी।

बी। राहब की नैतिकता

अब, यदि आप उनकी सुरक्षा के लिए इस्तेमाल किए गए साधनों के सवाल पर वापस आते हैं, तो यह निश्चित रूप से चर्चा के लिए एक वैध विषय है। जैसा कि मैंने बताया, इस पर अक्सर चर्चा होती रही है। कुछ लोग उस तरीके में दोष पाते हैं जिससे उसने उनकी रक्षा की। मैं अपने लिए उसकी कार्रवाई पर फैसला सुरक्षित रखना पसंद करूंगा। बाइबल उसकी और उसके बयानों की कोई आलोचना या निंदा नहीं करती है हैं बाइबिल में - विशेष रूप से नए नियम के पाठ - काफी प्रशंसनीय हैं, विशेषकर उसके विश्वास के लिए। लेकिन सवाल उठता है: जब जेरिको के राजा ने उन जासूसों को पकड़ने के लिए अपने लोगों को भेजा तो राहाब का दायित्व क्या था? जेरिको के राजा के प्रति, साथ ही जिन जासूसों की वह रक्षा कर रही थी, उनके प्रति उसका क्या दायित्व था? क्या हिब्रू जासूसों के ठिकाने के बारे में पूछे जाने पर जेरिको के राजा को उन्हें धोखा देने का उसका दायित्व था? मैं कहूंगा कि जेम्स 2:25 काफी सकारात्मक लगता है। याकूब 2:25 कहता है, "क्या राहाब पर विचार नहीं किया गया? *न्याय परायण* उसने क्या किया जब उसने जासूसों को रहने की जगह दी और उन्हें दूसरे रास्ते से भेज दिया?"

सी। राहब पर टिप्पणियाँ

मैं इस पर वापस आना चाहता हूँ और एक नैतिक मुद्दे के चित्रण के रूप में इस पर कुछ समय बिताना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि यह इस पर विचार करने लायक है। लेकिन ऐसा करने से पहले, मैं राहब के बारे में कुछ और टिप्पणियाँ करना चाहूँगा। वह पुराने नियम की एकमात्र महिला है जिसका नाम "राहब" है। मैथ्यू के पहले अध्याय में यीशु की वंशावली है, और मैथ्यू 1 के श्लोक 5 में आपने पढ़ा, "बोअज़ का पिता सैल्मन, जिसकी माँ राहब थी, बोअज़ ओबेद का पिता, जिसकी माँ रूत थी, ओबेद यिशै का पिता था, राजा दाऊद के पिता।" तो मैथ्यू 1 में एक राहब है, और अधिकांश लोग सोचते हैं कि यह वही राहब है, जो स्वयं ईसा मसीह के वंश में है। एक यहूदी परंपरा है कि विजय के बाद वह एक भविष्यवक्ता बन गई और अंततः यहोशू से शादी कर ली, और यिर्मयाह सहित आठ भविष्यवक्ता उसके वंशजों में से थे। इनमें से किसी के लिए भी बहुत कम सबूत हैं, और निश्चित रूप से कोई बाइबिल सबूत नहीं है, लेकिन उसका नाम ईसा मसीह की वंशावली में शामिल है।

डी। राहाब का साहस

जेरिको एक नगर-राज्य था जिसका अपना राजा था। यदि आप यहोशू 12 को देखें, तो आपके पास उन राजाओं और शहरों की एक सूची है जिन्हें यहोशू और इस्राएलियों ने कनान देश पर कब्ज़ा करने की प्रक्रिया में जीत लिया था। श्लोक 9 में आपने पढ़ा, "जेरिको का राजा, एक; ऐ का राजा, एक; यरूशलेम का राजा, एक; हेब्रोन का राजा, एक।" तो आपके पास नगर-राज्यों से बना एक क्षेत्र है, जिनमें से प्रत्येक का अपना राजा है। यह उस समय के अमर्ना पत्रों से हमें जो पता चला है, उसके साथ अच्छी तरह से फिट बैठता है, जहां अपने स्वयं के शासकों के साथ शहर-राज्य थे जो मिस्र में फिरौन के साथ मेल खाते थे। लेकिन उस तरह के सामाजिक संदर्भ में राहब ने जो किया वह बहुत खतरनाक बात थी। हम्मूराबी की संहिता, कानून 109 में, "अपराधियों" की सूचना न देने पर मौत की सज़ा है। इसलिए उस समय के नागरिकों पर अपराधियों की रिपोर्ट करने के कुछ दायित्व थे। निश्चित रूप से उसने जो किया उससे उसकी अपनी जान खतरे में पड़ सकती थी यदि वह उन जासूसों की रक्षा करते हुए पकड़ी गई होती। इसलिए उसने एक साहसी कार्य किया, और उसका कार्य स्पष्ट रूप से उसके विश्वास से पैदा हुआ था। उसका मानना था कि यहोवा स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर है, और

वह जेरिको के राजा के बजाय उस परमेश्वर और उसके लोगों के साथ पहचान बनाना चाहती थी।

इ। राहाब की नैतिकता - झूठ बोलना

उसके कार्यों की नैतिकता एक बिल्कुल अलग विषय है, और मैं उस पर बात करने में कुछ समय बिताना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि राहाब की कहानी व्यापक अर्थों में जो प्रश्न उठाती है वह यह है: क्या ऐसी कोई बोधगम्य परिस्थितियाँ हैं जिनमें किसी अन्य व्यक्ति को धोखा देना जायज़ है? अब, मैं इसे दोबारा दोहरा सकता हूँ और उस प्रश्न में एक और तत्व जोड़ सकता हूँ: क्या ऐसी कोई कल्पनीय परिस्थितियाँ हैं जिनमें किसी अन्य व्यक्ति को धोखा देना स्वीकार्य है, या शायद अनिवार्य भी है? इससे दांव और बढ़ जाता है। क्या ऐसी स्थितियाँ हैं जहाँ यह आपका है *दायित्व* राहाब ने जैसा कुछ किया वैसा ही कुछ करने के लिए?

अब मुझे ऐसा लगता है कि जब आप उस तरह के प्रश्न पर आते हैं, तो शुरुआत करने का स्थान इसे नौवीं आज्ञा की आवश्यकताओं के संदर्भ में रखना है। दस आज्ञाओं का मूलभूत कानून नैतिकता के लिए ढांचा, उद्देश्य ढांचा प्रदान करता है। नौवीं आज्ञा है "तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।" नौवीं आज्ञा के निहितार्थ क्या हैं? मैं उस पर गौर करना चाहता हूँ कि इसकी क्या आवश्यकता है और यह किस पर रोक लगाता है, और इसके व्यापक इरादे को देखने से पहले, सबसे पहले इसे नौवीं आज्ञा के विशिष्ट इरादे के संबंध में करना चाहता हूँ।

1. राहाब और 9^{वाँ} धर्मदिश

तो नौवीं आज्ञा का विशिष्ट उद्देश्य क्या है, "तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना"? उस निषेध की भाषा, और विशेष रूप से वाक्यांश "झूठी गवाही देना", हमें न्यायिक प्रक्रिया या न्यायशास्त्र के क्षेत्र में लाता है। मुझे लगता है कि आप कानून की दूसरी तालिका में - यानी आज्ञा 5-9 में पाएंगे - कि वे क्षैतिज संबंध के बारे में बात करते हैं। पहले चार ईश्वर के साथ आपके रिश्ते के बारे में बताते हैं। फिर, पांचवें से शुरू करते हुए, आपके पास "अपने पिता और माता का सम्मान करें"; छह, "तुम हत्या नहीं करोगे"; सात, "व्यभिचार वर्जित है," और आठ, "चोरी वर्जित है।" ये लोगों के बीच संबंधों को नियंत्रित करते हैं। पाँचवीं आज्ञा में, भगवान रिश्तों में अधिकार की रक्षा करते हैं:

"अपने पिता और अपनी माँ का सम्मान करें।" छठे में जहां हत्या वर्जित है, वह जीवन की रक्षा करता है। सातवें में, जहां व्यभिचार वर्जित है, वह विवाह की रक्षा करता है। आठवें में वह संपत्ति की रक्षा करता है। किसी भी सामाजिक संगठन की संरचना में ये बहुत बुनियादी चीजें हैं। नौवीं आज्ञा में, वह न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से अन्य आज्ञाओं को लागू करने का प्रावधान करता है: "आपको अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए।" इसलिए ईश्वर न केवल कानून देकर, बल्कि न्यायिक प्रक्रिया द्वारा उन कानूनों को लागू करने के प्रावधान बनाकर भी समाज में व्यवस्था और न्याय के लिए आधार सुरक्षित करता है या प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, न्याय का एक न्यायालय होना चाहिए, और ऐसे अधिकारी होने चाहिए जो सामाजिक व्यवस्था में न्याय के रखरखाव और बहाली की व्यवस्था करें। ऐसा करने में, प्रक्रिया की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक उन आरोपों को साबित करने के लिए गवाहों को बुलाना है जो उन अन्य आज्ञाओं में से एक को तोड़ने के लिए किसी के खिलाफ लाए जा सकते हैं।

मुझे लगता है कि वह सारी न्यायिक प्रक्रिया नौवीं आज्ञा के शब्दों में बंधी हुई है, "आप झूठी गवाही नहीं देंगे।" जहां तक इसके विशिष्ट इरादे की बात है, "झूठी गवाही देना" न्यायिक तंत्र के इस मुद्दे पर बात कर रहा है, जहां आपके पास एक न्यायाधीश होगा, या कोई व्यक्ति जो आरोप लगा रहा होगा। न्यायाधीश यह स्थापित करने के लिए गवाहों को बुलाएगा कि क्या शिकायत वैध है, शपथ ली जाएगी, निर्णय लिया जाएगा और सजा सुनाई जाएगी।

2. इजराइल में न्यायिक व्यवस्था

जहां तक इसके लिए कानूनी पृष्ठभूमि की बात है, आपने व्यवस्थाविवरण 16:18 में पढ़ा है कि "तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें जो नगर दिया है, उस में तुम्हारे हर एक गोत्र के लिए न्यायाधीश और अधिकारी नियुक्त किए जाने थे, और वे लोगों का निष्पक्षता से न्याय करेंगे। न्याय को बिगाड़ना या पक्षपात न करना। रिश्वत न लेना, क्योंकि रिश्वत बुद्धिमानों की आंखें अन्धी कर देती है, और धर्मियों की बातें पलट देती है। केवल न्याय और न्याय का ही पालन करो, जिस से तुम जीवित रहो, और उस देश के अधिकारकर्तों बनो जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें देता है।" ऐसा तब किया जाना था जब इजराइल कनान में आये। प्रत्येक नगर में न्यायाधीश होने थे। अब 2 इतिहास 19:5 को देखें। आपने

यहोशापात के बारे में पढ़ा, "उसने यहूदा के प्रत्येक गढ़वाले नगर में, देश में न्यायी नियुक्त किए। उसने उनसे कहा, 'जो कुछ तुम करते हो उस पर ध्यान से विचार करो, क्योंकि तुम मनुष्य के लिये नहीं, परन्तु यहोवा के लिये न्याय कर रहे हो, जो जब तुम फैसला सुनाते हो तो तुम्हारे साथ रहता है। अब यहोवा का भय तुम पर बना रहे। सावधानी से न्याय करो, क्योंकि हमारे परमेश्वर यहोवा के यहां कोई अन्याय, पक्षपात या रिश्वत नहीं है।"

अब, जैसा कि मैंने बताया, एक न्यायिक प्रक्रिया होनी थी। वह प्रक्रिया तथ्यों को स्थापित करने के लिए गवाहों पर निर्भर थी। व्यवस्थाविवरण पर वापस जाएँ; व्यवस्थाविवरण 19:15 और उसके बाद, आप पढ़ते हैं: "किसी भी अपराध या अपराध के आरोपी व्यक्ति को दोषी ठहराने के लिए एक गवाह पर्याप्त नहीं है। एक मामला दो या तीन गवाहों की गवाही से स्थापित होना चाहिए। इसलिए यह सुनिश्चित करने के लिए एक प्रक्रिया है कि कोई गलती न हो। किसी का अपराध सिद्ध करने के लिए आपको दो या तीन गवाहों की आवश्यकता होती है। लेकिन ध्यान दें कि यह यहां से कहां जाता है, और यह हमें नौवीं आज्ञा के शब्दों में वापस लाता है: "यदि कोई दुर्भावनापूर्ण गवाह किसी व्यक्ति पर अपराध का आरोप लगाने के लिए खड़ा होता है, तो विवाद में शामिल दो व्यक्तियों को सामने खड़ा होना चाहिए यहोवा उन याजकों और न्यायियों के सामने जो उस समय पद पर थे। न्यायाधीशों को पूरी जांच करनी चाहिए, और यदि गवाह झूठा साबित होता है, तो झूठी गवाही देना है..." ("झूठी गवाही" नौवीं आज्ञा के शब्दों के समान ही हिब्रू शब्द है, "आप अपने खिलाफ झूठी गवाही नहीं देंगे पड़ोसी।") "...अगर गवाह अपने भाई के खिलाफ झूठी गवाही देकर झूठा साबित हो, तो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा वह अपने भाई के साथ करना चाहता है। तुम्हें अपने बीच से बुराई को दूर करना होगा। बाकी लोग सुनेंगे और डरेंगे।" तो, आप देखिए, झूठी गवाही देना एक अत्यंत गंभीर व्यवसाय था, क्योंकि झूठी गवाही देने से अन्याय हो सकता था, और भगवान न्याय से चिंतित हैं। यह दिलचस्प है कि यहां प्रावधान यह है कि यदि कोई झूठा गवाह पाया जाता है - चाहे उसने दूसरे व्यक्ति पर चाहे जो भी आरोप लगाया हो, चाहे अपराध कुछ भी रहा हो - तो उस अपराध के लिए दंड वह स्वयं भुगतेगा।

मुझे कुछ साल पहले एक मामला पढ़ना याद है: मिडवेस्ट में कहीं, एक महिला ने एक आदमी पर उसके साथ छेड़छाड़ या बलात्कार करने का आरोप लगाया था। उस व्यक्ति को दोषी

ठहराया गया, जेल में डाल दिया गया और 10 या 15 साल की सजा दी गई। बाद में, जैसा कि बाद में पता चला, सबूत सामने आए—मुझे नहीं पता कि यह डीएनए था या नहीं—लेकिन वह इसमें निर्दोष साबित हुए। खैर, उन्होंने झूठी गवाही के आधार पर अपने जीवन के 10 साल दे दिए थे। अब, जहां तक मुझे पता है, जिस महिला ने उन पर यह आरोप लगाया था, उन्हें वास्तव में कभी कोई कष्ट नहीं उठाना पड़ा। उसे उसकी सज़ा नहीं काटनी पड़ी। हमारी न्यायिक प्रणाली इसी तरह से काम करती है, लेकिन यहाँ व्यवस्थाविवरण में यह उस तरह से काम नहीं करती। झूठी गवाही देना एक गंभीर व्यवसाय था। मुझे लगता है कि आम तौर पर आप मानव इतिहास में जो पाते हैं वह यह है कि भगवान ने न्यायिक प्रक्रिया के इस संदर्भ में "झूठी गवाही न दें" का प्रावधान किया है, लेकिन गिरे हुए इंसान अक्सर सिस्टम को उल्टा कर देते हैं और न्यायिक प्रणाली का उपयोग करने का प्रयास करते हैं। इसके मूलभूत उद्देश्य का विरोध। ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति को न्याय और सुरक्षा का आश्वासन देने के लिए प्रक्रिया देता है, और अक्सर लोग अन्याय पैदा करने के लिए प्रक्रिया का उपयोग करने का प्रयास करते हैं। इसीलिए यह आदेश है: "अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।"

3. दूसरा उदाहरण: नाबोथ का अंगूर का बाग (1 राजा 21)

मैं आपको पुराने नियम का एक और उदाहरण देता हूँ। 1 राजा 21 में अहाब द्वारा नाबोथ के अंगूर के बगीचे पर कब्ज़ा करने का वर्णन है, और यह एक दिलचस्प कहानी है। जैसा कि आपको याद है, अहाब का विवाह इज़ेबेल से हुआ था, जो फ़ीनीके की थी, जो बाल और अशतोरेत की उपासक थी। 1 राजा 21 की आयत 4 में कहा गया है कि जब नाबोथ ने अपना अंगूर का बाग अहाब को बेचने से इनकार कर दिया, तो अहाब उदास और क्रोधित होकर घर चला गया क्योंकि यिज़्रेली नाबोथ ने कहा था, 'मैं तुम्हें अपने पूर्वजों की विरासत नहीं दूंगा।' बिस्तर पर रूठना और खाने से इनकार करना। उसकी पत्नी इज़ेबेल अंदर आई और उससे पूछा, 'तुम इतने उदास क्यों हो? तुम क्यों नहीं खाओगे? या यदि तू चाहे, तो मैं तुझे इसके स्थान पर एक और दाख की बारी दे दूंगा।' परन्तु उस ने कहा, मैं अपनी दाख की बारी तुझे न दूंगा। इज़ेबेल ने कहा, क्या इस्राएल पर राजा होने के नाते तू इसी रीति से काम करता है? उठो और खाओ! खुश हो जाओ। मैं तुम्हें यिज़्रेली नाबोथ की दाख की बारी दिलाऊंगा। उन पत्रों में उसने लिखा: 'उपवास के एक दिन की घोषणा करो और

नाबोत को लोगों के बीच एक प्रमुख स्थान पर बिठाओ। लेकिन [ध्यान दें!] दो दुष्टों को उसके सामने बैठाओ और उनसे गवाही दो कि उसने भगवान और राजा दोनों को श्राप दिया है।" दूसरे शब्दों में, उनसे झूठी गवाही दिलवाओ। "तब उसे बाहर ले जाओ और उस पर पत्थरवाह करके मार डालो।" अतः नाबोत के नगर में रहने वाले पुरनियों और सरदारों ने वैसा ही किया जैसा ईज़ेबेल ने उन पत्रों में कहा था जो उसने उन्हें लिखे थे। उन्होंने उपवास की घोषणा की और नाबोत को लोगों के बीच एक प्रमुख स्थान पर बैठाया। तब दो दुष्ट लोग आकर उसके सामने बैठ गए, और लोगों के सामने नाबोत पर दोष लगाकर कहने लगे, कि नाबोत ने परमेश्वर और राजा दोनों को शाप दिया है। यह न्यायिक प्रक्रिया में झूठी गवाही देना है, और इसका परिणाम अन्याय हुआ। नाबोत को बाहर निकाला गया और मार डाला गया।

4. दूसरा उदाहरण: यीशु (मत्ती 26:59)

मैट 26:59 को देखें। यह तब है जब यीशु महासभा के सामने हैं। आपने वहाँ पढ़ा, "मुख्य याजक और सारी महासभा ढूँढ़ रही थी झूठे सबूत यीशु के विरुद्ध ताकि वे उसे मार डालें। परन्तु बहुतों के होते हुए भी उन्हें कोई नहीं मिला झूठे गवाह आगे आये।" यह न्यायिक प्रक्रियाओं को नष्ट करने का एक प्रयास है ताकि न्याय के बजाय अन्याय कायम रहे। इसलिए मुझे लगता है कि अगर हम वहाँ वापस जाएं जहाँ से हमने शुरुआत की थी, और राहब के कार्यों को नौवीं आज्ञा के प्रावधानों के संदर्भ में रखें, तो हम देखेंगे कि आज्ञा विशेष रूप से न्यायिक प्रक्रिया के बारे में बोल रही है और जिस तरह से किसी व्यक्ति के शब्दों से न्याय होना चाहिए अपने पड़ोसी के संबंध में अन्याय होने के बजाय। जहाँ तक नौवीं आज्ञा के व्यापक इरादे की बात है, मुझे लगता है कि इसके निश्चित रूप से व्यापक निहितार्थ हैं और यह पत्र की सीमाओं और इसकी न्यायिक सेटिंग में इसके कार्य से परे है। मुझे लगता है कि आदेश की भावना या व्यापक अर्थ यह है कि हमें अपने पड़ोसी की सेवा अपने साक्ष्य या शब्दों से करनी होगी, ताकि हमारे शब्दों से हमारे पड़ोसी पर अन्याय न हो। दूसरे शब्दों में, हमारे पड़ोसी का उचित हक हमारे शब्दों द्वारा सुरक्षित और संरक्षित किया जाना चाहिए, न केवल अदालत के समक्ष बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में भी। किसी को बदनाम करना, किसी के बारे में ऐसी अफवाहें फैलाना जो उन्हें और उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाए, बहुत आसान है। किसी गैर-मौसम

व्यक्ति के बारे में "सच्चाई" बोलना भी संभव है। दूसरे शब्दों में, शायद आप कुछ ऐसी जानकारी फैला सकते हैं जो किसी के अतीत के बारे में सच हो सकती है; जानकारी अब प्रासंगिक नहीं है, लेकिन यह व्यक्ति की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाती है। मुझे लगता है कि यह इस आदेश का उल्लंघन है।

5. क्या कभी झूठ बोलना जायज़ है?

एक। 4 पद

लेकिन ऐसे मामले भी हैं जिनमें नौवीं आज्ञा को लागू करना मुश्किल हो जाता है, और मुझे लगता है कि यहीं पर हम उस तरह की स्थिति में आते हैं, जिसमें राहब थी। फिर हम सवाल पर आते हैं: क्या बचने के लिए किसी अन्य व्यक्ति को धोखा देना कभी भी स्वीकार्य है? उनके पड़ोसी पर अन्याय हो रहा है? अब, ऐसा कहने के बाद, अक्सर यह प्रश्न अधिक स्पष्ट या सीधे तरीके से तैयार किया जाएगा: क्या कभी झूठ बोलने की अनुमति है? यदि आप यहोशू अध्याय 2 पर वापस जाएँ तो क्या राहाब ने यही नहीं किया? राजा के प्रतिनिधि अंदर आते हैं, और वह कहती है, "हाँ, वे यहाँ थे, परन्तु वे चले गये; मैं नहीं जानता कि वे किस रास्ते पर गये"; परन्तु उसने उन्हें छत पर रख दिया और छिपा दिया। इसलिए यदि आप यह प्रश्न तैयार करते हैं कि "क्या झूठ बोलना कभी भी स्वीकार्य है?", और फिर जिस तरह से उत्तर दिया गया है उसे देखें, मुझे लगता है कि मूल रूप से चार प्रतिक्रियाएँ हैं जो मुझे मिली हैं। मुझे जल्दी से उनके बारे में जानने दीजिए और फिर हम उन पर थोड़ी चर्चा करेंगे।

क्या कभी झूठ बोलना जायज़ है? कुछ लोग कहेंगे, "नहीं; बिना किसी अपवाद के, इसकी कभी भी अनुमति नहीं है।" वह प्रतिक्रिया यह कहेगी कि राहब ने जो किया वह ग़लत था क्योंकि उसने झूठ बोला था। वह स्पेक्ट्रम का एक छोर है। स्पेक्ट्रम का दूसरा छोर इस प्रश्न का उत्तर "हां" देगा "क्या कभी भी झूठ बोलने की अनुमति है?" लेकिन वे उस संदर्भ में "हां" में जवाब देंगे जिसे आम तौर पर स्थिति नैतिकता कहा जाता है, जो तर्क देता है कि नैतिकता का कोई उद्देश्य मानक नहीं है। आपको प्रेम के नियम को लागू करके किसी भी स्थिति में सही या ग़लत का निर्धारण करना चाहिए। जोसेफ फ्लेचर नाम के एक आदमी ने कई साल पहले एक किताब लिखी थी जिसका नाम

था *स्थिति नैतिकता* और यही वह मूल स्थिति थी जिसके लिए उन्होंने तर्क दिया: कोई वस्तुनिष्ठ मानक नहीं है; आप बस प्रेम के नियम को किसी भी स्थिति में लागू करें, और वह आपको जहां भी ले जाए, वही उत्तर है। मुझे लगता है कि यह स्थिति बाइबिल के मानदंडों के विपरीत है, क्योंकि निश्चित रूप से दस आज्ञाएँ एक वस्तुनिष्ठ मानक हैं; वहाँ है एक वस्तुनिष्ठ मानक, लेकिन वह स्पेक्ट्रम का दूसरा छोर है।

तीसरी स्थिति इस प्रश्न का उत्तर "हाँ" में देगी "क्या कभी भी झूठ बोलने की अनुमति है?"; लेकिन वह उत्तर निम्नलिखित योग्यता के साथ आता है: यह स्वीकार्य है *केवल* विषम परिस्थितियों में जिसमें दायित्वों का टकराव होता है। इस दृष्टिकोण के समर्थक कहेंगे कि कुछ चरम परिस्थितियाँ हैं जिनमें दायित्वों का टकराव होता है, और ऐसी स्थितियों में नौवीं आज्ञा की भावना वास्तविकता के अनुरूप कुछ औपचारिक बयान पर प्राथमिकता लेती है - दूसरे शब्दों में, "का एक औपचारिक बयान" सच।" दायित्वों के टकराव में, नौवीं आज्ञा की भावना पूर्ण सत्य के किसी प्रकार के औपचारिक बयान पर प्राथमिकता लेती है। मैं उस पर वापस आऊंगा और हम इस पर बाद में और चर्चा करेंगे।

प्रश्न का चौथा उत्तर "क्या झूठ बोलना कभी स्वीकार्य है?" उत्तर "नहीं" देता है, लेकिन फिर "झूठ" को फिर से परिभाषित करने के लिए आगे बढ़ता है ताकि उन स्थितियों को अनुमति दी जा सके जिनमें जो सच नहीं है उसे बोलना या सूचित करना झूठ नहीं है, कम से कम परिभाषा के अनुसार नहीं। अब आप कह सकते हैं, "यह सिर्फ शब्दार्थ है।" हां, हो सकता है। हम उस पर वापस आएंगे और उसे भी देखेंगे।

मेरे ख्याल से ये चार पद हैं: क्या कभी झूठ बोलना जायज़ है? नहीं, कभी नहीं। या फिर स्थिति नैतिकता पर जाएं जहां नैतिकता का कोई मानक नहीं है; लेकिन वह परमेश्वर के वचन से टकराता है। तीसरा, आपके पास कुछ चरम परिस्थितियों में परिस्थितियों का टकराव या दायित्वों का टकराव होता है जहां नौवीं आज्ञा की भावना कानून के पत्र पर प्राथमिकता लेती है। चौथे के लिए, "क्या झूठ बोलना कभी स्वीकार्य है?" "नहीं" है, लेकिन फिर "झूठ" को उन स्थितियों के लिए फिर से परिभाषित किया गया है जहां सच नहीं बोलना झूठ नहीं माना जाता है, कम से कम परिभाषा के अनुसार नहीं।

बी। 4 पदों की चर्चा

मैं पहले व्यू 3 पर जाना चाहता हूँ। क्या कभी झूठ बोलना जायज़ है? हां, लेकिन केवल वहीं जहां दायित्वों का टकराव होता है और नौवीं आज्ञा की भावना को सत्य के औपचारिक बयान पर प्राथमिकता दी जाती है। अब, अगर हम इसे नौवीं आज्ञा के संदर्भ में रखें तो यह दिलचस्प है। नौवीं आज्ञा को "आप झूठ नहीं बोलेंगे" से अलग तरीके से लिखा गया है। यह वह नहीं है जो यह कहता है। नौवीं आज्ञा कहती है, "तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी गवाही न देना।" मुझे लगता है कि हमें यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि यह कोई अमूर्त प्रकार की आज्ञा नहीं है "आपको झूठ नहीं बोलना चाहिए।" यह एक ऐसा सूत्रीकरण है जिसमें पड़ोसी शामिल है। "तुम अपने बोलने से अपने पड़ोसी को चोट न पहुँचाओ।" मेरे खयाल से वह झूठ बोलने के खिलाफ एक साधारण अवैयक्तिक निषेध की तुलना में शब्दांकन आदेश पर एक अलग झुकाव डालता है। यह वह नहीं है। यह एक निषेध है जिसमें कोई अन्य व्यक्ति शामिल है। इसका सार यह है, "आप अपने शब्दों से अपने पड़ोसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकते।" मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि इसमें तीन तत्व शामिल हैं: आप, आपका पड़ोसी और स्थिति। वे तीनों ईश्वर के अधीन हैं। कुछ स्थितियों में आप और आपका पड़ोसी शामिल होते हैं। इस स्थिति को हम वास्तविकता कहते हैं। तो आपके पास वे तीन तत्व हैं: आप, आपका पड़ोसी, और ईश्वर के सामने वास्तविकता। भगवान आमतौर पर हमसे यह पूछते हैं कि जब हम बात करें तो वास्तविकता और पड़ोसी दोनों को ध्यान में रखें। आप अपने पड़ोसी की खातिर वास्तविकता से इनकार नहीं कर सकते, लेकिन आप वास्तविकता की खातिर अपने पड़ोसी से इनकार नहीं कर सकते। यहीं पर आपको दायित्व का टकराव मिलता है। कभी-कभी आपको ऐसी स्थितियाँ मिलती हैं जिनमें आपको पड़ोसी के प्रति दायित्व और वास्तविकता के बारे में बोलने के दायित्व के बीच टकराव होता है। तो फिर सवाल यह है कि क्या ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें हमें अपने पड़ोसी के प्रति अपने दायित्व को वास्तविकता के साक्षी बनने से अधिक बड़ा दायित्व मानना चाहिए?

तीसरी स्थिति के समर्थक कहेंगे कि जो व्यक्ति यह कहता है कि हर स्थिति में हम वास्तविकता के अनुरूप किसी औपचारिक कथन से बंधे हैं, उसने वास्तव में कानून के अक्षर (अर्थात् नौवीं आज्ञा) को उसकी भावना या उसके इरादे से अलग कर दिया है। इस तरह वे वास्तव में इस कठोर औपचारिक तरीके से आदेश का उल्लंघन कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, कानून के अक्षरशः पालन करना वास्तव में कानून की भावना या इरादे का उल्लंघन है। हमें निश्चित रूप से यह

ध्यान में रखना चाहिए कि कानून की भावना को निश्चित रूप से अक्षर से अलग नहीं किया जा सकता है, लेकिन इसका विपरीत भी सच है: अक्षर को आत्मा से अलग नहीं किया जाना चाहिए। यहां आपके पास रिश्ते में सच बोलने की क्षमता है क्योंकि अमूर्त में सच के बजाय इसमें एक और व्यक्ति शामिल है।

तो उस तीसरी स्थिति के समर्थक कहेंगे, "हां, झूठ बोलना स्वीकार्य है - लेकिन केवल चरम परिस्थितियों में जहां दायित्वों का टकराव होता है, जिसमें हमारे शब्दों को यह गारंटी देनी चाहिए कि हमारे पड़ोसी को अन्याय के बजाय न्याय मिलेगा।" इस प्रकार राहब जैसी किसी व्यक्ति ने जो किया वह नौवीं आज्ञा की भावना या इरादे का पालन करने में पूरी तरह से उचित था।

सी। चार्ल्स हॉज की चर्चा

अब, चौथे दृष्टिकोण के जवाब में, वकील इस सवाल का जवाब "नहीं" देंगे कि "क्या कभी भी झूठ बोलने की अनुमति है?", लेकिन फिर "झूठ" शब्द का अर्थ फिर से परिभाषित करें। पृष्ठ 46 पर अपने उद्धरण देखें। यह चार्ल्स हॉज से लिया गया है *व्यवस्थित धर्मशास्त्र* और दस आज्ञाओं की उनकी चर्चा, और यहाँ विशेष रूप से नौवीं आज्ञा की उनकी चर्चा। मैं कह सकता हूँ कि दस आज्ञाओं पर उनकी चर्चा बहुत उपयोगी है; यह काफी लंबा और विस्तृत है, लेकिन उसका खंड तीन है *व्यवस्थित धर्मशास्त्र* दस आज्ञाओं के दायित्वों और कर्तव्यों की व्याख्या के संबंध में बहुत उपयोगी है। ध्यान दें कि वह क्या कहता है: "थोखा देने का इरादा झूठ के विचार का एक तत्व है, लेकिन यह भी हमेशा दोषी नहीं होता है। जब फिरौन ने हिब्रू दाइयों को अपने देश की महिलाओं के नर बच्चों को मारने की आज्ञा दी, तो उन्होंने उसकी अवज्ञा की, और जब उनसे उनकी अवज्ञा का हिसाब मांगा गया तो उन्होंने कहा, 'हिब्रू महिलाएं मिस्र की महिलाओं की तरह नहीं हैं, क्योंकि वे अधिक जीवंत हैं और दाइयों के आने पर प्रसव कराती हैं। उनके लिए, इसलिए परमेश्वर ने दाइयों के साथ अच्छा व्यवहार किया, और लोग बहुत बढ़ गए, और बहुत शक्तिशाली हो गए।' पहले शमूएल 16:1-2 में [जो काफी दिलचस्प है - हम थोड़ी देर बाद इस पर वापस आएं], हम पढ़ते हैं कि भगवान ने कहा शमूएल से कहा, मैं तुझे बेतलेहेमवासी यिश्शै के पास भेजूंगा, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों के बीच में मुझे एक राजा

ठहराया है। शमूएल ने कहा, मैं कैसे जा सकता हूँ? यदि शाऊल ने यह सुन लिया, तो वह मुझे मार डालेगा।' [याद रखें, अध्याय 15 में शाऊल को राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया गया था, और अब परमेश्वर शाऊल के स्थान पर राज्याभिषेक करने के लिए शमूएल को भेज रहा है। परमेश्वर कहता है, "वहां जाओ और ऐसा करो," परन्तु शमूएल ने विरोध किया: "यदि शाऊल ने सुना तो वह मुझे मार डालेगा।"] और यहोवा ने कहा, 'एक बछिया अपने साथ ले जा, और कह, मैं यहोवा के लिये बलिदान करने आया हूँ।' यहां, ऐसा कहा जाता है, वास्तव में जानबूझकर दिए गए धोखे का मामला है। शमूएल की बेतलेहेम की यात्रा के उद्देश्य के संबंध में शाऊल को धोखा दिया जाना था।

2 राजा 6:14-20 में दर्ज एलीशा का आचरण और भी अधिक उल्लेखनीय है। अराम के राजा ने दोतान में भविष्यद्वक्ता को पकड़ने के लिये सैनिक भेजे, और जब वे उसके पास आए, तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना करके कहा, मैं तुझ से बिनती करता हूँ, कि इन लोगोंको अन्धा कर दे। एलीशा का वचन. और एलीशा ने उन से कहा, यह मार्ग नहीं है, और न यह नगर है; मेरे पीछे हो लो, और मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास पहुंचाऊंगा जिसे तुम ढूंढते हो। परन्तु वह उन्हें सामरिया में ले गया। और ऐसा हुआ, कि जब वे शोमरोन में आए, तब एलीशा ने कहा, हे प्रभु, इन मनुष्योंकी आंखें खोल, कि वे देखें। और यहोवा ने उनकी आंखें खोल दीं, और वे देखने लगे; और, देखो, वे सामरिया के बीच में थे [अर्थात्, अपने शत्रु के हाथों में]।' हालाँकि, भविष्यवक्ता ने उन्हें घायल नहीं होने दिया, लेकिन आदेश दिया कि उन्हें खाना खिलाया जाए और उनके स्वामी के पास वापस भेज दिया जाए। . पुराने नियम में इस प्रकार के धोखे के उदाहरण असंख्य हैं। उनमें से कुछ केवल दर्ज किए गए रिकॉर्ड हैं, जिनमें यह बताने के लिए कुछ भी नहीं है कि उन्हें भगवान की दृष्टि में कैसे माना जाता था, लेकिन ऊपर उद्धृत मामलों में अन्य को या तो प्रत्यक्ष या आयातित दैवीय मंजूरी प्राप्त हुई।

अब हॉज आम तौर पर इस प्रकार की स्थितियों पर टिप्पणी करते हैं: "नैतिकतावादियों के बीच यह सामान्य भावना है कि युद्ध में युक्तियाँ स्वीकार्य हैं। यह कि न केवल किसी शत्रु से इच्छित गतिविधियों को छिपाना वैध है, बल्कि उन्हें अपने इरादे के बारे में गुमराह करना भी वैध है। एक सैन्य कमांडर के कौशल का एक बड़ा हिस्सा अपनी प्रतिक्रिया पर विचार करते हुए अपने प्रतिद्वंद्वी के इरादों का पता लगाना है। सैन्य रणनीतियों में यह एक बहुत ही सामान्य प्रक्रिया है।" निःसंदेह, इराक युद्ध में, उनके पास ये सभी नौसैनिक जहाजों में तट से दूर थे; ऐसा लग रहा था कि वे एक निश्चित

दिशा से आक्रमण करने जा रहे थे, लेकिन फिर वे दूसरी ओर से आ गये, जो एक सामान्य बात है। "कुछ लोग इतने ईमानदार होंगे [यह आगे जा रहा है], कि जब डकैती की आशंका हो तो कमरे में रोशनी रखने से इनकार कर दें, इस उद्देश्य से कि यह धारणा पैदा हो कि घर के सदस्य सतर्क थे।"

यहां हॉज एक और दिलचस्प चित्रण का उपयोग करते हैं। हम ऐसे समय में रहते हैं जब आप ये टाइमर सेट कर सकते हैं, इसलिए यदि आप एक सप्ताह के लिए दूर जा रहे हैं, तो आपकी लाइटें हर रात अंधेरा होने पर जलती हैं और 10 या 11 बजे बंद हो जाती हैं। मुझे नहीं पता कि आप ऐसा करते हैं या नहीं; हमने कभी-कभी ऐसा किया है। उद्देश्य क्या है? मुझे लगता है कि वह यहां यही कहते हैं: आप लोगों को यह सोचकर धोखा देना चाहते हैं कि आप घर पर हैं। क्या ऐसा करने में नैतिक या नैतिक रूप से कुछ गलत है?

"इन आधारों पर आम तौर पर यह स्वीकार किया जाता है कि आपराधिक झूठ में न केवल जो झूठ है उसका प्रतिपादन और संकेत और धोखा देने का इरादा होना चाहिए, बल्कि कुछ दायित्व का उल्लंघन भी होना चाहिए। यदि परिस्थितियों की कोई जटिलता हो सकती है जिसके तहत कोई व्यक्ति सच बोलने के लिए बाध्य नहीं है, तो जिन लोगों को घोषणा और संकेत दिया गया है, उन्हें उससे ऐसा करने की उम्मीद करने का कोई अधिकार नहीं है। एक जनरल अपने विरोधियों के सामने अपनी इच्छित गतिविधियों को प्रकट करने के लिए बाध्य नहीं है, और उसके प्रतिद्वंद्वी को यह मानने का कोई अधिकार नहीं है कि उसका स्पष्ट इरादा ही उसका वास्तविक उद्देश्य है! एलीशा अपने व्यक्ति को सुरक्षित रखने और उसकी जान लेने में सीरियाई लोगों की सहायता करने के लिए बाध्य नहीं था। उन्हें यह मानने का कोई अधिकार नहीं था कि वह इस प्रकार उनकी सहायता करेगा, और इसलिए उसने उन्हें गुमराह करने में कोई गलती नहीं की। अक्सर यह कहा जाता है कि ऊपर बताया गया नियम तब लागू होता है जब कोई लुटेरा आपके पर्स पर कब्ज़ा कर लेता है। ऐसा कहा जाता है कि इस बात से इनकार करना सही है कि आपके पास इसमें कुछ भी मूल्यवान है। आप अपराध करने में उसकी सहायता करने के लिए बाध्य नहीं हैं; उसे यह मानने का कोई अधिकार नहीं है कि आप उसके उद्देश्य की पूर्ति में सहायता करेंगे।

अब यह एक दिलचस्प मामला है. हॉज की टिप्पणी पर ध्यान दें - यह इतना स्पष्ट नहीं है: "सच बोलने का दायित्व बहुत गंभीर है, और जब किसी व्यक्ति के पास झूठ बोलने या अपना पैसा

खोने का विकल्प बचता है, तो बेहतर होगा कि वह अपने पैसे को जाने दे। दूसरी ओर" [और यहां आप देखते हैं कि आप एक अलग संदर्भ में पहुंच गए हैं], "यदि एक मां अपने बच्चे का पीछा करते हुए किसी हत्यारे को देखती है, तो उसे अपने अधिकार में किसी भी तरीके से उसे गुमराह करने का पूरा अधिकार है, क्योंकि सामान्य दायित्व सच बोलना उच्च दायित्व के आलोक में कुछ समय के लिए विलीन हो गया है या खो गया है। दूसरे शब्दों में, यदि आपके बच्चे का जीवन खतरे में है, तो उस व्यक्ति की मदद करने का आपका कोई दायित्व नहीं है जो उस जीवन को लेना चाहता है। उस बच्चे की सुरक्षा के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं वह करना आपका दायित्व है।

हॉज कहते हैं, "यह सिद्धांत इसके संभावित या वास्तविक दुरुपयोग से अमान्य नहीं है; इसका आसानी से दुरुपयोग किया जा सकता है।" [आप देखते हैं, यहीं आपको तौलना होगा और सावधान रहना होगा कि आप इन रेखाओं को कैसे खींचते हैं।] "इसका बहुत दुरुपयोग किया गया है। जेसुइट्स ने सोचा कि चर्च की भलाई को बढ़ावा देने का दायित्व हर दूसरे दायित्व को समाहित कर लेता है या उसका स्थान ले लेता है; और इसलिए उनकी प्रणाली में, न केवल बिना किसी हिचकिचाहट के झूठ, बल्कि झूठी गवाही, डकैती और यहां तक कि हत्या भी वैध हो गई यदि चर्च के हित को बढ़ावा देने के इरादे से किया गया हो। दुरुपयोग के इस दायित्व के बावजूद, यह सिद्धांत कि उच्च दायित्व निचले दायित्व से मुक्त हो जाता है, दृढ़ है। अब उस बिंदु पर, आप उत्तर संख्या तीन पर वापस आ गए हैं: उच्च दायित्व, और दायित्व का टकराव। दायित्वों के क्रम हैं।

लेकिन ध्यान दें कि वह आगे कहां जाता है, और यही बात हॉज की स्थिति को नंबर तीन से अलग करती है। "अब विचाराधीन प्रश्न यह नहीं है कि क्या गलत करना कभी सही है, जो कि एकमात्रवाद है, न ही यह प्रश्न है कि 'क्या झूठ बोलना कभी सही है?' बल्कि यह है, 'झूठ क्या होता है?' यह केवल एक प्रश्न नहीं है *झूठ का बयान*, एक गलत बयान, लेकिन जब हमसे सच बोलने की उम्मीद की जाती है और हम बाध्य हैं तो धोखा देने का इरादा होना चाहिए। अर्थात्, ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जिनमें मनुष्य सच बोलने के लिए बाध्य नहीं होता है, और इसलिए ऐसे मामले भी होते हैं जिनमें जो सत्य नहीं है उसे बोलना या सूचित करना झूठ नहीं है।" यही हॉज की स्थिति का सार है। "यह कहीं बेहतर है कि कोई व्यक्ति मर जाए या हत्या की अनुमति दे बजाय इसके कि वह ईश्वर के विरुद्ध पाप करे। मसीह को अस्वीकार करके, या झूठे देवताओं में विश्वास करने का दावा करके

ईसाई शहीदों को अपने स्वयं के जीवन या अपने भाइयों के जीवन को बचाने के लिए कुछ भी प्रलोभित नहीं कर सका। इन मामलों में सच बोलने की बाध्यता पूरी तरह लागू थी। लेकिन युद्ध के समय एक कमांडिंग जनरल के मामले में, प्रतिद्वंद्वी को अपने सच्चे इरादों की जानकारी देने का दायित्व मौजूद नहीं है। उनके मामले में जानबूझकर किया गया धोखा नैतिक झूठ नहीं है।" तो क्या कभी भी झूठ बोलना जायज़ है? यदि आप इसे इस तरह से रखते हैं, तो हॉज कहेंगे, "नहीं, ऐसा नहीं है," लेकिन फिर आप फिर से परिभाषित करते हैं कि झूठ क्या है, ऐसी स्थितियों के लिए अनुमति देना जिसमें कुछ ऐसी बात बताना जो सच नहीं है या कुछ ऐसा बोलना जो सच नहीं है, परिभाषा के अनुसार नहीं है झूठ माना जाता है।

डी। वाल्टर कैसर: झूठ बोलना हमेशा गलत होता है, गलती राहब की थी

मैं पहले उत्तर पर वापस जाना चाहता हूं। क्या कभी भी झूठ बोलना जायज़ है?—नहीं, बिना किसी अपवाद के। मैं कहूंगा कि संभवतः उस पहले दृष्टिकोण का सबसे मजबूत वर्तमान समर्थक वाल्टर कैसर है। यह उनकी मात्रा में उनकी प्रतिक्रिया है *पुराने नियम की नैतिकता की ओर*। इस प्रश्न पर अपनी चर्चा में, कैसर फिरौन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया में राहब के साथ-साथ हिब्रू दाइयों में भी गलती पाता है। वह अपने अधिकांश तर्क को उस अंतर पर आधारित करता है जो वह दूसरे व्यक्ति की परिभाषा का अनुसरण करता है जिसे हम एक मिनट में अपने उद्धरण में देखेंगे। लेकिन वह जिसे छिपाना और झूठ बोलना कहते हैं, उसके बीच अंतर करता है; दूसरे शब्दों में, वह तर्क देगा कि कुछ स्थितियों में किसी अन्य व्यक्ति से कुछ छिपाना स्वीकार्य है, लेकिन किसी अन्य व्यक्ति से झूठ बोलना कभी भी स्वीकार्य नहीं है। जहां तक राहब और उन नए नियम के ग्रंथों का सवाल है, वह कहते हैं कि राहब की सराहना उसके विश्वास के लिए की जाती है, झूठ बोलने के लिए नहीं।

अपने उद्धरणों के पृष्ठ 49 को देखें। मध्य पैराग्राफ में कैसर कहते हैं, "दाइयों और राहब के मामले में मुद्दा यह है कि क्या भगवान अन्यथा संदिग्ध तरीकों को पहचानते हैं और अनुमोदित करते हैं जो उनके चरित्र की अखंडता और उनकी इच्छा के उद्देश्य को पूरा करने के लिए अलग हैं। क्या मजबूत विश्वास सह-अस्तित्व में रह सकता है और अविश्वास की कमजोरियों से प्रेरित हो सकता है? यह सच है कि इब्रानियों 11:31 में राहाब को विश्वास की महिला के रूप में शामिल किया गया है:

'विश्वास ही से वेश्या राहाब, क्योंकि उसने जासूसों का स्वागत किया था, अवज्ञाकारियों के साथ नहीं मारी गई।' इसी तरह जेम्स 2:25: 'क्या राहाब भी नहीं थी जब वेश्या ने जासूसों को आश्रय दिया और उन्हें अलग दिशा में भेज दिया, तो उसने जो किया उसके लिए उसे धर्मी माना गया?' [लेकिन, यहां उनकी टिप्पणी है:] राहाब के विश्वास के क्षेत्रों का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए। यह उसका झूठ नहीं था जिसने उसे दिव्य मान्यता दिलाई; बल्कि, यह उसका विश्वास था। वह जेरिको के राजा से डरने की तुलना में इब्रानियों के भगवान भगवान और इज़राइल के निर्गमन में भगवान की कार्रवाई पर अधिक विश्वास करती थी। उसके विश्वास का प्रमाण जासूसों को प्राप्त करने और उन्हें दूसरे रास्ते से बाहर भेजने के कार्यों में देखा गया था। इस प्रकार वह बाइबिल की नैतिकता के नियमों के तहत अच्छी तरह से थी, जैसे कि भगवान की पवित्रता और चरित्र का सम्मान करना, जब उसने जासूसों को छुपाया और उन्हें दूसरे रास्ते से भेजने के लिए वैध सावधानी बरती। लेकिन उसका झूठ बोलना [कम से कम कैसर की राय में] उपरोक्त दोनों स्वीकृत प्रतिक्रियाओं के लिए एक अनावश्यक उपादान था।"

खैर, अगर उसे सच बताना होता तो वह बस इतना ही कह सकती थी। फिर आप प्रश्न में पड़ जाते हैं, "क्या यह परमेश्वर को प्रलोभित नहीं है?" उस प्रश्न को एक मिनट के लिए रोक कर रखें; हम उस पर वापस आने वाले हैं। और भी उदाहरण हैं. कोरी टेन बूम झूठ नहीं बोलेगा। वह ईश्वर से हस्तक्षेप की अपेक्षा करेगी। भाई एंड्रयू, बाइबिल की तस्करी में, झूठ नहीं बोलेगा, और वह ईश्वर से हस्तक्षेप की उम्मीद करेगा। तो एक पल के लिए उस प्रश्न को रोक कर रखें।

पृष्ठ 49 पर अंतिम टिप्पणी, हिब्रू दाइयों के बारे में, आप ध्यान दें कि कैसर क्या कहता है: "हालांकि हम सहमत हैं कि फिरौन ने सभी तथ्यों को जानने का अधिकार छोड़ दिया है, और जबकि यह एक वैध मामला हो सकता है - वैध छुपाने का मामला शाऊल और सैमुअल के मामले की तरह, हम इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि दाइयों को झूठ बोलने का कोई अधिकार था। फिरौन पूरी सच्चाई जानने का हकदार नहीं है, लेकिन दाइयों का कर्तव्य है कि वे केवल सच बोलें। यदि उन्होंने फिरौन के नए कार्यक्रम के महीनों के दौरान वास्तव में एक भी हिब्रू पुरुष का प्रसव नहीं कराया था, तो उनकी प्रतिक्रिया पुराने नियम की नैतिकता के अनुसार प्रशंसनीय और उचित थी। हालाँकि, अगर वे आंशिक रूप से सच थे और आंशिक रूप से झूठ बोल रहे थे, तो वे झूठ बोलने पर राहाब,

इब्राहीम, इसहाक या जैकब के समान ही दोष-योग्य थे" - कैसर की राय में, अब्राहम बिंदु है।

अब हमने कैसर के उन पैराग्राफों को पढ़ा है, और जो मैंने पहले उल्लेख किया था वह यह था कि उनका दृष्टिकोण वास्तव में झूठ बोलने और छिपाने के बीच उनके द्वारा किए गए अंतर पर आधारित है। पृष्ठ 48 पर वापस जाएँ। उनका कहना है कि आसा महान ने इस परिभाषा पर निम्नलिखित तरीके से टिप्पणी की है, और वह महान से भी उद्धृत कर रहे हैं: वह कहते हैं, "धोखा जानबूझकर किया जाना चाहिए क्योंकि अपराध एजेंट से जुड़ा नहीं है, क्योंकि अपराध कुछ के अंतर्गत आता है झूठ बोलने के अलावा अन्य संप्रदाय. जिस व्यक्ति या व्यक्तियों को धोखा दिया गया है, उसके पास सच्चाई जानने का दावा होना चाहिए, अगर कुछ भी संप्रेषित किया गया है, अन्यथा धोखे के कार्य में किसी भी दायित्व का उल्लंघन नहीं किया जाता है। और अगले कई वाक्य: "झूठ बोलने को छुपाने से सावधानीपूर्वक अलग किया जाना चाहिए। जिस व्यक्ति को धोखा देने का हमें कोई अधिकार नहीं है, उससे तथ्य छिपाना उचित है। छिपाना तभी पाप है जब छिपाए गए तथ्य को प्रकट करने का दायित्व हो।" तो यही वह अंतर है जो वह बनाता है।

वह आगे कहते हैं, "इस परिभाषा का महत्व उन उदाहरणों में देखा जा सकता है जहां नैतिक बुराई न होते हुए भी छिपाव मौजूद था। इस प्रकार महान सिखाते हैं कि छिपाना उचित या कर्तव्य भी है जब यह नैतिक दायित्व का उल्लंघन नहीं करता है। कई उदाहरण बताएंगे कि ये किस प्रकार की स्थितियाँ हैं। छुपाने की मांग तब की जाती है जब जिस व्यक्ति से सच्चाई छिपाई जाती है उसने अपना अधिकार खो दिया है, या उस सच्चाई पर उसका कोई वैध दावा नहीं है। [और यहां बताया गया है कि वह 1 शमूएल 16 को कैसे समझता है।] 1 शमूएल 16:1-3 में शाऊल की यही स्थिति थी। परमेश्वर ने शमूएल को आज्ञा दी, कि अपने सींग में तेल भर ले, और अपने मार्ग पर चला जा; मैं तुम्हें बेतलेहेम के यिश्ई के पास भेज रहा हूँ। मैंने उसके पुत्रों में से एक को राजा बनने के लिए चुना है।" परन्तु शमूएल ने कहा, 'मैं कैसे जा सकता हूँ? शाऊल इसके बारे में सुनेगा और मुझे मार डालेगा।' प्रभु ने कहा, 'अपने साथ एक बछिया ले जाओ और कहो, "मैं प्रभु के लिए बलिदान करने आया हूँ।"' अब उस अगले पैराग्राफ में टिप्पणी पर ध्यान दें: "जॉन से कोई प्रश्न नहीं पूछा गया" यहां मरे को उस बयान के अलावा किसी अन्य माध्यम से छिपाने के लिए दैवीय प्राधिकरण दिया गया है, जो सैमुअल की जेसी की यात्रा के मुख्य उद्देश्य का खुलासा करता। लेकिन यह ध्यान रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि

सैमुअल के पास झूठ बोलने का कोई विशेष विशेषाधिकार नहीं था। एकमात्र बिंदु जो वैध रूप से कहा जा सकता है वह यह है कि कुछ स्थितियों में छिपाना झूठ नहीं है। केवल वही सत्य था जो शाऊल के सामने प्रस्तुत किया गया था। जहाँ तक शाऊल के अंतिम इरादों की बात है, किसी भी बात की पुष्टि या खंडन नहीं किया गया है और किसी भी चीज़ ने शाऊल के मन को इस बात की जाँच करने के लिए उकसाया नहीं कि इस समय बेथलेहम जाने के लिए सैमुअल के अंतिम उद्देश्य क्या हो सकते हैं। और ऐसे सवालों ने एक पूरी तरह से अलग समस्या खड़ी कर दी है जब उसने सैमुअल का सामना किया तो उसे उन उद्देश्यों की पुष्टि या खंडन करने से बचना होगा या शाऊल के प्रकटीकरण के क्रोध का सामना करना होगा।

अब, आप देखिए, मुझे लगता है कि कैसर यहाँ बिना किसी अंतर के एक अंतर बना रहा है। हाँ, शमूएल जब वहाँ गया तो उसने बलिदान किया, परन्तु यहोवा ने उसे निर्देश दिया, "अपने साथ एक बछिया ले जा और कह, 'मैं यहोवा के लिये बलिदान करने आया हूँ।'" इसका उद्देश्य क्या है? निस्संदेह, यह सब एक निश्चित अर्थ में काल्पनिक है क्योंकि शाऊल ने उससे नहीं पूछा; परन्तु यदि उसने पूछा होता, और शमूएल ने उत्तर दिया होता, "मैं सब कुछ बलिदान के लिये बेथलेहेम जा रहा हूँ," तो क्या वह धोखा नहीं है? क्या धोखा देना मकसद नहीं? आप शायद कह सकते हैं कि तकनीकी रूप से वह सच बोल रहा था क्योंकि उसने बलिदान तो दिया, लेकिन साथ ही उसने धोखा भी दिया! या यदि उससे पूछा जाता तो उसने धोखा दे दिया होता और यही उसका उत्तर था। प्रभु ने उसे निर्देश दिया, मैं कहूँगा, न केवल छिपाने के लिए बल्कि धोखा देने के लिए भी!

तो आप 1 शमूएल 16 के बारे में यह प्रश्न पूछ सकते हैं: क्या शमूएल को दी गई परमेश्वर की आज्ञा का उद्देश्य केवल छिपाना, या धोखा देना भी है? मुझे ऐसा लगता है, यदि प्रश्न पूछा गया होता, और यदि सैमुअल ने वही किया होता जो प्रभु ने उसे करने का निर्देश दिया था, तो परिणाम जानबूझकर धोखा होगा! शाऊल सोचेगा कि वह वहाँ बलि चढ़ाने जा रहा है, न कि किसी नये राजा का अभिषेक करने। इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि अंतर उतना उपयोगी है जितना कैसर सुझाता है।

इ। कोरी टेन बूम ने द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदियों की रक्षा की

अब सवाल पूछा गया कि राहब को क्या कहना चाहिए था. मैंने बताया कि कोरी टेन बूम ने

कई शरणार्थियों को छुपाया था। यह आपकी ग्रंथसूची में मौजूद एक लेख से है, "क्या राहब का झूठ पाप था?" पीटर बार्न्स द्वारा। उनका कहना है कि कोरी टेन बूम ने कई शरणार्थियों को बचाया, विशेष रूप से नाजी अत्याचार से बच रहे यहूदियों को। कोरी टेन बूम ने झूठ न बोलने की प्रतिबद्धता जताई, यहां तक कि उन लोगों को बचाने के लिए भी जो गेस्टापो से छिपे हुए थे। उनका कहना है कि भगवान सत्य-कथन को पूर्ण सुरक्षा के साथ सम्मान देते हैं। उन्होंने गेस्टापो को सच बताने की वकालत की, भले ही इससे कितने यहूदियों की जान खतरे में थी। इस दृष्टिकोण से, राहाब को सच बोलना चाहिए था और भरोसा करना चाहिए था कि ईश्वर अपने किसी माध्यम से दो इस्राएली जासूसों की रक्षा करेगा। अब मुझे लगता है कि यदि आप बिना किसी अपवाद के हमेशा सच बोलने के लिए बहस करने जा रहे थे, तो आपको कहना होगा कि राहब को कहना चाहिए था "वे छत पर हैं" और फिर उम्मीद करते हैं कि भगवान अपने किसी माध्यम से उनकी रक्षा करेंगे। मैं जो सोचता हूं वह एक बेहतर दृष्टिकोण है, जे.आई. पैकर ने कहा, "राहब ने नौवीं आज्ञा नहीं तोड़ी होगी, क्योंकि वह अपने पड़ोसी के खिलाफ झूठी गवाही नहीं दे रही है, बल्कि उसके पक्ष में है!" दूसरे शब्दों में, उसके शब्द अपने पड़ोसी को अन्याय के बजाय न्याय दिलाने के लिए थे। रशदूनी का कहना है कि "अगर राहब ने सच कहा होता, जैसा कि कोरी टेन बूम ने कहा था, तो वह भगवान का परीक्षण करने के पाप की दोषी बन गई होती।" वह मसीह के शैतान के प्रलोभन के समानांतर देखता है, जो उसे मंदिर के शिखर से छलांग लगाने का आग्रह करता है क्योंकि भगवान ने वादा किया था कि उसके स्वर्गदूत उसके लोगों की रक्षा करेंगे। मंदिर की चोटी से छलांग लगाना भगवान से अनचाहे, बेकार चमत्कार की मांग करना होता! तो, यह जटिल हो जाता है। इसके बहुत सारे प्रभाव हैं।

एफ। भाई एंड्रयू और बाइबिल तस्करी

मैंने भाई एंड्रयू का उल्लेख उनकी बाइबिल तस्करी और उनकी पुस्तक की समीक्षा में किया था *तस्करी की नैतिकता*, ग्रेग ब्राह्मसेन की एक समीक्षा में, वे कहते हैं, "पुस्तक की कमजोरियों में से एक यह बनाए रखने का प्रयास है कि तस्करी की उनकी गतिविधि सत्य-कथन से विचलन नहीं है। एंड्रयू स्पष्ट रूप से यह तर्क देने के लिए मजबूर महसूस करता है कि जब वह बाइबिल की तस्करी करता है तो वह झूठ नहीं बोलता। यहां दो बातें अवश्य कही जानी चाहिए। सबसे पहले, एंड्रयू को

इस अवलोकन के खिलाफ खुद का बचाव करने के लिए कोई मजबूरी महसूस नहीं करनी चाहिए कि वह सच नहीं बोल रहा है जैसा कि पवित्रशास्त्र आमतौर पर मांग करता है; न ही उसे यह महसूस करना चाहिए कि उसे सीमा रक्षकों से खुलेआम झूठ बोलने से पीछे हटना चाहिए। एंड्रयू की इस चर्चा में, वह छुपाने और झूठ बोलने के बीच के अंतर पर वापस आता है। वह कहते हैं, "आपको छुपाने और झूठ बोलने के बीच अंतर करने में सावधानी बरतनी चाहिए। जहां तक मेरे अपने मंत्रालय का सवाल है, मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा। मैं पूरी ताकत से प्रार्थना करता हूं कि मुझे भी सच न बताना पड़े।" अपने अंतिम अध्याय में वह बताते हैं कि वह हमेशा सच बोलते हैं, लेकिन कभी-कभी उसका एक प्रासंगिक हिस्सा छिपा देते हैं। कभी-कभी वह ऐसी बातें कहता है जिसके लिए गार्डों की अलग-अलग व्याख्या होगी। दूसरे शब्दों में, वह उन्हें धोखा देता है। अब मुझे लगता है कि इस तरह के व्यवहार को नैतिक रूप से उचित ठहराया जा सकता है यदि हमें विशेष परिस्थितियों में सच बोलने से विचलित होने की अनुमति दी जाती है, लेकिन यह तर्क देना हास्यास्पद है कि यह सच बोलने जैसे व्यवहार के अनुरूप है। यदि एंड्रयू अपने श्रोता को धोखा देने का इरादा रखता है, तो उसने उस तरह से सच नहीं बताया है जिस तरह से पवित्रशास्त्र आमतौर पर इसकी मांग करता है। अपनी रणनीति के माध्यम से अपने सुनने वालों को स्वेच्छा से गुमराह करके, उसने उतना ही झूठ बोला है।

तो, यह एक दिलचस्प नैतिक प्रश्न है, और जटिल भी। मैंने इस पर यह समय सिर्फ इसलिए बिताया क्योंकि मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में आपको सोचना चाहिए और इसे सुलझाने का प्रयास करना चाहिए। मैं यह चेतावनी जोड़ना चाहूंगा: लगभग ये सभी उदाहरण अपमानजनक अधिनायकवादी प्रकार की सरकारों या युद्ध की स्थितियों के संदर्भ में हैं। इस देश में रहते हुए, मुझे नहीं लगता कि हममें से ज़्यादातर लोगों का सामना अक्सर इस तरह के मुद्दों से होता है। यदि आप अधिनायकवादी दमनकारी सरकारों के अधीन रह रहे होते, विशेष रूप से एक ईसाई के रूप में, तो आप संभवतः लगातार इस प्रकार की नैतिक दुविधाओं के साथ जी रहे होते, और आपको इसके बारे में सोचना होगा, और उनसे गुजरना होगा।

मैं कह सकता हूँ कि मेरी पत्नी का पालन-पोषण नीदरलैंड पर जर्मन कब्जे के दौरान, बचपन में हॉलैंड में हुआ था। उसे अच्छी तरह याद है कि जर्मन सैनिक एम्स्टर्डम में मार्च कर रहे थे और बेतरतीब ढंग से लोगों को गोली मार रहे थे। उसके माता-पिता ने उस दौरान कुछ यहूदी लोगों को

अपने घर में आश्रय दिया था। उसके माता-पिता अब नहीं रह रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं उन्हें इतनी अच्छी तरह से जानता हूँ कि अगर उन जर्मन सैनिकों में से एक ने उनके सामने वाले दरवाजे पर दस्तक दी, जैसा कि राहब स्थिति में हुआ था, और पूछा कि क्या उनके घर में कोई व्यक्ति छिपा हुआ है, तो वे ऐसा नहीं करेंगे। दरवाज़ा खोला और कहा "हाँ, वे वहाँ कोठरी में छिपे हुए हैं" और उम्मीद की कि भगवान हस्तक्षेप करेंगे। उन्होंने ऐसा नहीं किया होगा! मुझे यकीन है कि उन्हें लगा होगा कि उनकी ज़िम्मेदारी अपने शब्दों से उस व्यक्ति की रक्षा करना है, भले ही इसका मतलब उन जर्मन सैनिकों को गुमराह करना या धोखा देना हो। तो वहाँ एक उच्च दायित्व है। दायित्व उस श्रेणी में आता है।

बी. जासूसों को जेरिको भेजना

4. जॉर्डन पार करना - यहोशू 3:1-5:1

एक। नदी पार करना

वह सब बी. 3 के अंतर्गत था, "जासूसों को जेरिको भेजना।" 4. "जॉर्डन पार करना: यहोशू 3:1-5:1" है। इज़राइल को एक बहुत ही खतरनाक चीज़ का सामना करना पड़ा: कनान देश में प्रवेश करने के लिए उन्हें एक नदी पार करनी पड़ी। सैन्य स्थिति में नदी पार करना किसी को बहुत नुकसान में डालता है। आपने अध्याय 3 के श्लोक 2 में देखा कि वे तीन दिनों तक जॉर्डन के किनारे डेरा डाले रहे। यदि आप अध्याय 3 श्लोक 15 में और नीचे जाते हैं तो आप पढ़ते हैं, "फसल के दौरान जॉर्डन बाढ़ के चरण में था" - यह फसल का समय था। तो यहाँ वे जॉर्डन के किनारे डेरा डाले हुए हैं, कनान देश में उनके प्रवेश के लिए इस बाधा को देख रहे हैं, और नदी बाढ़ के चरण में थी। मैं नहीं जानता कि आपमें से कितने लोगों ने जॉर्डन देखा है; मैं कई साल पहले वहाँ था और यह बाढ़ के चरण में नहीं था, यह शुष्क मौसम में था। आप जानते हैं कि आपने "शक्तिशाली जॉर्डन के घूमने" के बारे में गाना सुना है - यह शक्तिशाली जॉर्डन की तरह नहीं दिखता था, यह एक छोटी सी खाड़ी की तरह दिखता था। लेकिन मुझे यकीन है कि बाढ़ के स्तर पर यह काफी अलग दिखता है, क्योंकि वहाँ बरसात के मौसम में पानी उस तरह की मिट्टी को बहाकर बाढ़ ला देता है। इसलिए इज़राइल को जॉर्डन पार करना पड़ा, और यह करना एक कठिन काम था।

परन्तु प्रभु एक संकेत देता है। श्लोक 9 पर ध्यान दें: "यहोशू ने इस्राएलियों से कहा, 'यहाँ आओ और अपने परमेश्वर यहोवा के वचन सुनो। आप ऐसे ही करेंगे जान लो कि जीवित परमेश्वर तुम्हारे बीच में है और वह तुम्हारे आगे से कनानी, हित्ती, हिवी, परिज्जी, गिर्गाशी, एमोरी और यबूसी लोगों को निश्चय निकाल देगा। देखो, सारी पृथ्वी के यहोवा की वाचा का सन्दूक तुम्हारे आगे यरदन में जाएगा।" पद 13: "जैसे ही सारी पृथ्वी के प्रभु यहोवा का सन्दूक उठानेवाले याजक अस्त हो जाएंगे। यरदन में पैर रखते ही, उसका नीचे की ओर बहने वाला पानी कट जाएगा और ढेर बनकर खड़ा हो जाएगा।"

इसलिए प्रभु ने यहोशू से कहा (और यहोशू के माध्यम से लोगों को बताया), कि यही होगा, और पद 15बी में आप पढ़ते हैं, "तौभी जैसे ही सन्दूक उठाने वाले याजक जॉर्डन के पास पहुंचे और उनके पैर पानी के किनारे को छू गए, ऊपरी धारा से पानी बहना बंद हो गया। वह बहुत दूर, ज़ेरेथान के निकट आदम नामक नगर में ढेर में ढेर हो गया।" अब, ज़ेरेथान उस स्थान से लगभग 20 मील उत्तर में है जहाँ इज़राइल जॉर्डन को पार कर रहा है। इज़राइल जेरिको के सामने जॉर्डन को पार कर रहा है, और लगभग 20 मील उत्तर में नदी का प्रवाह अवरुद्ध हो गया है। अतः जहाँ इस्राएली थे, वहाँ पानी बहना बंद हो गया, परन्तु वह ठीक समय था जब याजकों ने सन्दूक उठाया और यरदन नदी की ओर बढ़ना शुरू किया। जिससे वह पूरी तरह टूट गया, और लोग यरीहो के सामने से पार हो गए।

यदि आपके पास एनआईवी अध्ययन बाइबिल है तो वहाँ श्लोक 13 पर एक नोट है जहाँ यह कहा गया है, "नीचे की ओर बहने वाला पानी ढेर में काट दिया जाएगा।" नोट में कहा गया है: "ढेर" के लिए हिब्रू शब्द यहाँ श्लोक 16 में भी पाया जाता है; यह संभव है कि भगवान ने यब्बोक के प्रवेश द्वार के पास एडम नामक स्थान पर जॉर्डन को बांधने के लिए भूस्खलन जैसे भौतिक साधन का उपयोग किया हो। हाल ही में 1927 में, इस क्षेत्र में पानी का अवरोध दर्ज किया गया था जो 20 घंटे से अधिक समय तक चला, लेकिन फिर भी चमत्कारी तत्व कम नहीं हुआ। उस क्षेत्र में जॉर्डन एक संकीर्ण घाटी से होकर गुजरती है जिसके दोनों ओर दीवारें हैं, और ऐसे एक से अधिक उदाहरण हैं जहाँ भूस्खलन या भूकंप ने जॉर्डन नदी को अवरुद्ध कर दिया है। हो सकता है कि यह उस तरह की कोई घटना घटी हो, लेकिन जैसा कि यह नोट कहता है, "चमत्कारी तत्व कम नहीं हुआ है।" प्रभु ने उसका उपयोग किया, और जो कुछ उन्होंने कहा था उसे पूरा करने के लिए उसे सटीक समय दिया,

और वे पार करने में सक्षम हुए।

बी। पत्थरों की स्थापना: केयर्न

तो यह अध्याय 3 है। अध्याय 4 में, यहोशू को बारह पत्थर प्राप्त करने का निर्देश दिया गया है, प्रत्येक जनजाति के लिए एक, और इस्राएलियों के लिए प्रभु के इस उद्धार के लिए एक स्मारक बनाना क्योंकि वे जॉर्डन नदी को पार करने में सक्षम थे। आप 4:4 में पढ़ते हैं, "तब यहोशू ने उन बारह पुरूषों को, जो उस ने इस्राएलियों में से नियुक्त किए थे, अर्थात् हर एक गोत्र में से एक को बुलाया, और उन से कहा, 'अपने परमेश्वर यहोवा के सन्दूक के आगे आगे यरदन के मध्य में जाओ। तुम में से हर एक इस्राएलियों के गोत्रों की गिनती के अनुसार अपने कन्धे पर एक पत्थर उठाए, जो तुम्हारे बीच चिन्ह ठहरे। भविष्य में, जब आपके बच्चे पूछेंगे, 'इन पत्थरों का क्या मतलब है?' उन से कहो, कि यरदन की धारा यहोवा की वाचा के सन्दूक के साम्हने कट गई। जब वह यरदन पार हुआ, तो यरदन का जल बन्द हो गया। ये पत्थर इस्राएल के लोगों के लिए हमेशा के लिए एक स्मारक होंगे।" तो यहां भगवान ने जो किया था उसका एक दृश्य अनुस्मारक है। जब आप अध्याय 4 में श्लोक 21 पर जाते हैं जब वे बारह पत्थर वास्तव में स्थापित होते हैं, तो यहोशू कहता है, "भविष्य में जब तुम्हारे वंशज अपने पिता से पूछें, 'इन पत्थरों का क्या मतलब है?' सूखी भूमि। क्योंकि तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे पार जाने तक यरदन को तेरे साम्हने सुखा दिया। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने यरदन के साथ वैसा ही किया जैसा उस ने लाल समुद्र के साथ किया था, जब उस ने उसे हमारे पार जाने तक हमारे साम्हने सुखा दिया। और फिर श्लोक 24 पर ध्यान दें: "उसने ऐसा इसलिए किया ताकि पृथ्वी के सभी लोग जान सकें कि यहोवा का हाथ शक्तिशाली है और ताकि तुम सदैव अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो।" आप उसी प्रकार की थीम पर वापस आ गए हैं जो निर्गमन की विपत्तियों के साथ थी: "ताकि मिस्रवासी जान सकें कि मैं यहोवा हूँ; जिससे इस्राएल जान ले कि मैं यहोवा हूँ।" ऐसी ही कहानी का एक और उदाहरण यहां है। अतः ईश्वर फिर से अपने अस्तित्व और अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है।

सी। लाल सागर पार करने के समानांतर

दूसरी बात जो लाल सागर को पार करने के समय से मिलती-जुलती है, वह यह है कि जिस प्रकार निर्गमन के समय मूसा के नेतृत्व को प्रमाणित किया गया था, उसी प्रकार यहोशू के नेतृत्व को भी यहाँ प्रमाणित किया गया है। आप 3:7 में ध्यान दें, प्रभु ने यहोशू से कहा, "आज मैं तुझे सारे इस्राएल की दृष्टि में बड़ा करना आरंभ करूंगा, ताकि वे जान सकें कि मैं तुम्हारे साथ हूँ जैसे मैं मूसा के साथ था।" फिर अंदर देखें। यहोशू 4:14 "उस दिन यहोवा ने सब इस्राएलियों के साम्हने यहोशू को बड़ा किया, और वे उसके जीवन भर उसका आदर करते रहे, जैसा उन्होंने मूसा का किया था।" यह निर्गमन 14:31 के समान है, जहां लाल सागर से मुक्ति के बाद, आप पढ़ते हैं: "जब इस्राएलियों ने मिस्रियों के विरुद्ध यहोवा द्वारा प्रदर्शित महान शक्ति को देखा, तो लोगों ने यहोवा का भय माना और उस पर और मूसा पर भरोसा किया उसका नौकर।" अब, जैसा कि मूसा के साथ हुआ था, यहाँ यहोशू के साथ होता है।

5. खतना और गिलगाल में पड़ाव - यहोशू 5:2-12

आइए 5 पर चलते हैं और फिर हम विश्राम करेंगे। 5. "खतना और गिलगाल में डेरा: यहोशू 5:2-12।" मैं कहूंगा कि 5:1 हमें बताता है कि कैसे, भूमि में प्रवेश करते ही, इज़राइल उन पुरुषों का खतना कर सकता था जिनका जंगल के दौरान खतना नहीं हुआ था, साथ ही कनानियों द्वारा हमला किए बिना फसह का पालन कर सकता था। पहला पद कहता है, "जब यरदन के पश्चिम के सब एमोरी राजाओं और तट के सब कनानी राजाओं ने सुना, कि यहोवा ने इस्राएलियोंके साम्हने यरदन को हमारे पार जाने तक सुखा डाला, तब उनके मन पिघल गए; उनमें अब इस्राएलियों का सामना करने का साहस नहीं रहा।" इसलिए, कनानियों की विरोध करने की इच्छा भय से दूर हो गई थी, और मुझे ऐसा लगता है कि भगवान ने ऐसा इसलिए किया ताकि वादा किए गए देश में इज़राइल के शुरुआती दिन युद्ध के बजाय पूजा और वाचा के नवीनीकरण में व्यतीत हो सकें। युद्ध आएगा, लेकिन कुछ और महत्वपूर्ण चीजें थीं जिन्हें इज़राइल के युद्ध में शामिल होने से पहले करने की ज़रूरत थी। पहली बात यह थी कि जंगल में अड़तीस वर्षों के दौरान जिन पुरुषों का खतना नहीं हुआ था, उन सभी का अब खतना किया जाना था।

ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि जंगल काल के दौरान खतना का अभ्यास नहीं किया गया था।

आपने पद 2 में पढ़ा, "यहोवा ने यहोशू से कहा, चकमक पत्थर की छुरियाँ बना; इस्राएलियों का फिर खतना करो।" अतः यहोशू ने चकमक पत्थर की छुरियाँ बनाई, और गिबथ हारलोत में इस्राएलियों का खतना किया। अब उसने ऐसा इसलिए किया: वे सभी जो मिस्र से बाहर आए - सैन्य उम्र के सभी लोग - मिस्र छोड़ने के बाद रास्ते में रेगिस्तान में मर गए। जो लोग बाहर आए उन सब का खतना हो चुका था, परन्तु मिस्र से यात्रा के दौरान जंगल में पैदा हुए सभी लोगों का खतना नहीं हुआ था।" इस प्रकार चालीस वर्ष से तुम्हारी एक पीढ़ी ऐसी है जिसका खतना नहीं हुआ। अब यहोशू को ऐसा करने की आज्ञा दी गई।

अब सवाल यह उठता है कि जंगल की अवधि के दौरान उन सभी पुरुषों का मूसा कानून के नियमों के अनुसार खतना क्यों नहीं किया गया? इसकी कोई सीधी व्याख्या नहीं है। संख्या 14:34 को देखें - वहाँ एक संदर्भ है और भजन 95 में भी - जासूसों के कादेश बर्निया के पास जाने और कहने के बाद, "हम देश को जीत नहीं सकते," प्रभु ने उन्हें अड़तीस वर्षों के लिए दोषी ठहराया। जंगल, और यह कहता है "चालीस वर्षों तक - प्रत्येक चालीस दिन के लिए एक वर्ष जब आपने भूमि की खोज की - आप अपने पापों के लिए पीड़ित होंगे," और फिर अगले वाक्यांश पर ध्यान दें: "और जानें कि मेरे खिलाफ होना कैसा है आप।" इस प्रकार, उस अड़तीस वर्ष की अवधि के लिए, इस्राएल यहोवा के न्याय के अधीन था।

इस पर विचार करते हुए भजन 95:9 को देखें। यह मरीबा और मस्सा के बारे में बात करता है "जहां तुम्हारे पिताओं ने मुझे परखा और परखा," लेकिन फिर श्लोक 10 को देखें: "चालीस वर्ष तक मैं उस पीढ़ी से क्रोधित रहा; मैंने कहा, 'वे ऐसे लोग हैं जिनके दिल भटक गए हैं, और उन्होंने मेरी चाल नहीं पहचानी।' इसलिए मैंने अपने क्रोध में शपथ खाकर कहा, 'वे मेरे विश्राम में कभी प्रवेश नहीं करेंगे।'" ऐसा लगता है कि इस्राएल परमेश्वर के न्याय के अधीन था। वह अड़तीस साल की अवधि, और शायद इसी कारण से, हालांकि इसका कोई स्पष्ट बयान नहीं है, खतना की वाचा का चिन्ह लागू करना उचित नहीं था और ऐसा नहीं किया गया था। लेकिन प्रभु यहाँ स्पष्ट है: अब यह किया जाना है, और इसलिए यहोशू 5 में नई पीढ़ी का खतना किया गया है।

गिलगाल में फसह

फिर फसह मनाया जाता है। 5:10 कहता है, "महीने के चौदहवें दिन की शाम को, जब इस्राएलियों ने यरीहो के मैदान पर गिलगाल में डेरा डाला, तो उन्होंने फसह मनाया।" जाहिर तौर पर जंगल में भटकने के दूसरे वर्ष के बाद से, फसह भी नहीं मनाया गया था। संख्या 9 में (याद रखें कि हमने इसके बारे में बात की थी), फसह का पालन किया गया था और कुछ लोग ऐसे थे जो धार्मिक रूप से अशुद्ध थे जो तब पालन नहीं कर सकते थे, लेकिन प्रावधान किया गया था ताकि वे बाद की अवधि में भाग ले सकें। लेकिन, संख्या 9 में फसह के पालन के संदर्भ के अलावा, निर्गमन के दूसरे वर्ष जब इज़राइल अभी भी सिनाई में था, फसह के पालन के लिए कोई और संदर्भ नहीं है।

निःसंदेह, जो लोग खतनारहित थे वे फसह का पालन नहीं कर सकते थे, क्योंकि खतनारहित होने से वे धार्मिक रूप से अशुद्ध हो जाते। निर्गमन 12:43 को आंशिक रूप से देखें: "यहोवा ने मूसा से कहा, 'फसह के नियम ये हैं: कोई परदेशी उसमें से न खाए। जो दास तू ने मोल लिया है, वह उसका खतना करने के बाद उस में से खा सकता है।" पद 48 के अंत तक जाएं: "कोई खतनारहित पुरुष उस में से न खा सके। यही कानून देशी और तुम्हारे बीच रहने वाले परदेशियों पर भी लागू होता है।" यदि आप खतनारहित हैं, तो आप फसह में भाग नहीं ले सकते। तो एक ऐसी पीढ़ी थी जिसका खतना नहीं हुआ था, और उसी पीढ़ी ने फसह भी नहीं मनाया था।

यहां ईश्वर वादा किए गए देश में प्रवेश करने पर तुरंत अपने लोगों के साथ वाचा की संगति के नवीनीकरण की व्यवस्था करता है। वह उन्हें आश्वस्त करना चाहता है कि वह उनका वाचा परमेश्वर है। वह उन्हें प्रोत्साहित करना चाहता है क्योंकि वे आने वाली लड़ाइयों का सामना कर रहे हैं जिनमें वे जल्द ही शामिल होंगे।

केट दानही द्वारा प्रतिलेखन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
एलिजाबेथ फिशर द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया